**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12**
**Received: 24-01-2019; Accepted: 27-02-2019**
**www.educationjournal.org**
**Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 60-62**

# केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन

**जयसिंह जोधा[1], डॉ॰ अमित कुमार दवे[2]**

[1] शोधार्थी, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.), भारत।

[2] पर्यवेक्षक, (सहायक आचार्य), लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.), भारत।

## प्रस्तावना

आज के युग में बढ़ती जनसंख्या एवं जीवन की व्यस्तता के कारण विद्यालयों का महत्त्व और भी अधिक है। विद्यालयों को बालक के सर्वांगींण विकास का स्त्रोत माना गया है। क्योंकि विद्यालय का एक निश्चित उद्देश्य एवं पूर्व नियोजित कार्यक्रम होता है, जिसका प्रभाव बालक पर पड़ता है। इस कारण उसके व्यक्तित्व का सामंजस्य पूर्ण विकास होता है। विद्यालय बालकों को एक विशिष्ट वातावरण प्रदान करता है। यह वातावरण शुद्ध, सरल एवं सुव्यवस्थित होता है। जहाँ बालक निरन्तर प्रगति करता है। अगर विद्यालय में बालक समायोजित नहीं हो पाता है या उसे निरन्तर भय एवं दुश्चिंताए सताती है तो वह प्रगति नहीं कर पायेगा तथा इसके पीछे विद्यालय के विभिन घटक तथा सम्पूर्ण वातावरण का दूषित होना मुख्य कारण माना जायेगा।

## शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

विद्यालय में विद्यार्थियों की कई प्रकार की इच्छाएं लालसायें तथा महत्त्वकांक्षाएं होती है जैसे – शैक्षिक अवसरों की असमानता, उच्च अध्ययन की स्वतन्त्रता, सह–शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर, अपनी पसन्द के विषय चयन एवं व्यवसाय में जाने की आकांक्षाएं आदि। विद्यार्थी में ये आकांक्षाएं कई बार इतनी प्रबल हो जाती है कि वे जीवन का एक मात्र ध्येय बनकर रह जाती है। यह महत्त्वकांक्षाएं सभी विद्यार्थियों की भिन्न–भिन्न हो सकती है। किसी की कम तो किसी की उच्च स्तर की औसत आकांक्षाएं विद्यार्थी को उसकी शैक्षिक एवं सामाजिक गतिविधियों को संतुलित बनाये रखती है, जबकि न्यून आकांक्षा स्तर के विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विकास एवं पृथक–पृथक परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता का ह्रास कर देती है। इसके विपरीत कुछ विद्यार्थियों में यह प्रेरणा इतनी तीव्र होती है कि वे अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति किसी भी हद तक जाकर करना चाहते है। इसके लिये वे अपनी समस्त शारीरिक एवं मानसिक युक्तियों का उपयोग उसकी पूर्ति में लगा देते है, परन्तु परिणाम सदैव अनुकूल नहीं होते हैं और नकारात्मक प्राप्त होते है।

## व्यक्तित्व की दृष्टि से

सामान्यतः उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को उत्कृष्ट माना गया है जो देखने में अतिसुन्दर एवं प्रभावी लगता है, परन्तु व्यक्ति के बाह्य स्वरूप के अलावा भी उसकी आन्तरिक विलक्षणताओं का भी बड़ा योगदान माना जाता है। व्यक्तित्व अनेक व्यवस्थाओं का संगठन है। यदि व्यक्तित्व सुसंगठित न हो तो व्यक्ति वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में असमर्थ हो सकता है। वर्तमान समय में व्यक्तित्व शब्द से तात्पर्य ऐसे संगठन से है जिसमें बहुत से मानवीय गुण अन्तर्निहित और संगठित होते है। किन्तु व्यक्ति का यह विचार मानवीय गुणों के बारे में कोई निश्चित माप नहीं देता। कुछ व्यक्ति व्यक्तित्व के बारे में कहते है कि व्यक्तित्व मानवीय व्यवहार के प्रतिमान है जो किसी परिस्थिति विशेष के प्रत्युत्तर में किये जाते है जो परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते है तथा जिसका उस परिस्थिति विशेष से अलग कोई अस्तित्व नहीं होता।

## पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

### व्यक्तित्व

"मानसिक शिक्षा विज्ञान के विकास ने व्यक्तित्व की पुरानी अवधारणाओं को बदल दिया है। गैरिसन, कार्ल सी॰ और अन्य विद्वानों ने लिखा है "व्यक्तित्व सम्पूर्ण मनुष्य है, उसकी स्वाभाविक अभिरूचि तथा क्षमताएं उसके मूलभूत में अर्जित किये गये ज्ञान इन कारकों का संगठन तथा समन्वय व्यवहार प्रतिमानों, आदर्शो, मूल्यों एवं अपेक्षाओं की विशेषताओं से पूर्ण होता है।"

प्राचीन मतानुसार – व्यक्तित्व शब्द का अंग्रेजी शब्द Persona से विकसित होकर पर्सनेल्टी शब्द में रूपान्तरित कर दिया गया है। लेटिन भाषा में जिसका मतलब नकली चेहरा है।

आधुनिक मत – व्यक्ति एवं व्यक्तित्व दोनों ही अलग–अलग शब्द है। जिनका एक–दूसरे से अटूट सम्बन्ध होते हुए भी विभेद है। यदि ध्यानपूर्वक विचार किया जाये तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने गुणों से अन्य व्यक्ति को प्रभावित करता है। तथा अन्य लोगों से प्रभावित होता है। अतः वर्तमान समय में व्यक्तित्व को मध्यवर्ती चर के रूप में माना जा रहा है। कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिकों के विचारों को स्पष्ट करें जिन्होंने मध्यवर्ती चर मानकर व्यक्ति के स्वरूप को स्पष्ट किया है व्यक्तित्व के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों के द्वारा दी गई परिभाषाएं इस प्रकार है :–

मन के अनुसार – "व्यक्तित्व एक व्यक्ति के गठन व्यवहार के तरीकों, रूचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं का सबसे विशिष्ट संगठन है।"

वारेन के अनुसार – "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है, जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।"

आलपोर्ट की परिभाषा के अनुसार – "व्यक्तित्व व्यक्ति की इन मनोभौतिक पद्धतियों का गतिशील संगठन है जो पर्यावरण के प्रति अपूर्व समायोजन स्थापित करता है।"

### केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों जो कक्षा 9, 10, 11 व 12 में अध्ययनरत् है। इन विद्यालयों में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम चलता है तथा मूल्यांकन भी केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा किया जाता है।

### विद्यार्थी

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी

विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों से है, चाहे वे नवोदय विद्यालय में पढ़ते हो या केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करते है।

## शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्त्ता शोध अध्ययन हेतु जो उद्देश्य निर्धारित किये है, वे इस प्रकार है –

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की तुलना करना।

## शोध परिकल्पनाएँ

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

## शोध अध्ययन मे प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध में अध्ययन में आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि को काम में लिया गया, चूंकि शैक्षिक अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का अत्यधिक महत्त्व है तथा यह बड़े व्यापक रूप में प्रयोग में ली जाने लाने वाली विधि है। यह अतिप्राचीन विधि है। इसका सम्बन्ध वर्तमान में उपस्थित संस्थितियों अथवा प्रचलित व्यवहारों से है। यह वर्तमान शैक्षिक समस्याओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है तथा इन्हें हल करने की ओर संकेत करती है।

## शोध न्यादर्श

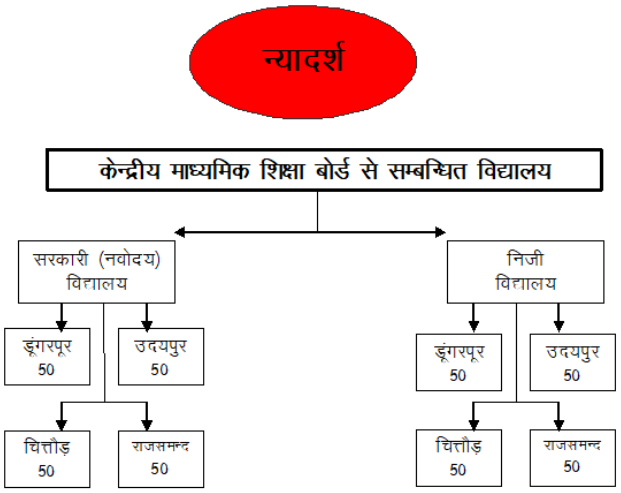


1. विद्यालयों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि से किया गया है।
2. विद्यार्थियों का चयन भी सोद्देश्य न्यादर्श विधि से किया यगा है।

## शोध परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध अअध्ययन में उदयपुर मण्डल के उदयपुर, चित्तौड़, राजसमन्द एवं डूँगरपुर जिले को सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
3. सरकारी केन्द्रीय विद्यालयों के अन्तर्गत प्रत्येक जिले के जवाहर नवोदय विद्यालय को लिया गया है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

## शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

शोध में दो प्रकार के उपकरण प्रयोग में लाये जाते है।

(1) मानकीकृत

(2) स्वनिर्मित उपकरण

चूंकि उक्त से सम्बन्धित दो मानकीकृत उपकरण उपलब्ध है :–,

1. बहुआयामी व्यक्तित्व सूची (MPI) डॉ॰ मंजू अग्रवाल
2. व्यासायिक आकांक्षा प्रमापनी (OAS) डॉ॰ जे॰एस॰ ग्रेवाल

**तालिका 1:** केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन

| क्र॰सं॰ | वर्ग | N | मध्य बिन्दु | मध्यमान | मानक विलचन |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | सरकारी (नवोदय) | 200 | 240 | 265.48 | 14.511 |
| 2. | निजी | 200 | 240 | 251.52 | 18.823 |

## व्याख्या

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों की व्यक्तित्व अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 265.48 व 251.52 है, जो कि मध्य बिन्दु 240 से अधिक है। अतः दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी। इसी प्रकार दोनों वर्गो का मानक विलचन क्रमशः 14.511 तथा 18.823 प्राप्त हुआ। अतः दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी।

**तालिका 2:** केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की तुलना

| क्र॰ सं॰ | उपक्षेत्र (घटक) | वर्ग | N | मध्य बिन्दु | मध्यमान | मानक विचलन | "टी" मूल्य | वि.वि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | अन्तर्मुखी / बहिर्मुखी | सरकारी | 200 | 40 | 43.52 | 4.834 | 8.0938 | अन्तर सार्थक है। |
| | | निजी | 200 | 40 | 39.84 | 4.239 | | |
| 2. | स्वयं के स्तर पर निर्णय | सरकारी | 200 | 40 | 45.96 | 4.643 | 9.0233 | अन्तर सार्थक है। |
| | | निजी | 200 | 40 | 41.72 | 4.754 | | |
| 3. | पराधीन / स्वतन्त्र | सरकार | 200 | 40 | 49.96 | 6.016 | 7.139 | अन्तर सार्थक है। |
| | | निजी | 200 | 40 | 45.92 | 5.275 | | |
| 4. | अस्थायी | सरकारी | 200 | 40 | 37.76 | 6.420 | 1.406 | अन्तर सार्थक नहीं है। |
| | | निजी | 200 | 40 | 38.56 | 4.850 | | |
| 5. | समायोजन | सरकारी | 200 | 40 | 48.24 | 3.818 | 8.884 | अन्तर सार्थक है। |
| | | निजी | 200 | 40 | 44.44 | 4.691 | | |
| 6. | तनाव / दबाव | सरकारी | 200 | 40 | 40.04 | 4.787 | 1.818 | अन्तर सार्थक नहीं है। |
| | | निजी | 200 | 40 | 41.04 | 6.128 | | |
| 7. | समेकित | सरकारी | 200 | 240 | 265.48 | 14.511 | 8.306 | अन्तर सार्थक है। |
| | | निजी | 200 | 240 | 251.52 | 18.82 | | |

## व्याख्या

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि समेकित रूप से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 265.48 व 251.52 आया, जो कि मध्य बिन्दु 240 से अधिक हैं इसी प्रकार मानक विलचन क्रमशः 14.511 तथा 18.823 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 8.306 आया, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है। अर्थात् परिकल्पना सं॰ 1 को अस्वीकृत किया जाता है।

व्यक्तित्व के प्रथम घटक – बहिर्मुखी/अन्तर्मुखी के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 43.52 तथा 39.84 आया, जो कि सरकारी का मध्यबिन्दु 40 से अधिक है, जबकि निजी का मध्य बिन्दु से कम है। अर्थात् सरकारी विद्यालय विद्यार्थियों की सकारात्मक तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की नकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 4.834 व 4.239 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 8.038 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।

व्यक्तित्व के द्वितीय घटक – स्वयं कें स्तर पर निर्णय के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 45.96 तथा 41.72 आया, जो कि मध्यबिन्दु 40 से अधिक है, अर्थात् दोनों वर्ग की इस क्षेत्र में सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 4.643 व 4.754 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 9.0233 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।

व्यक्तित्व के तृतीय घटक – पराधीन/स्वतन्त्र के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 49.96 तथा 45.92 आया, जो कि मध्यबिन्दु 40 से अधिक है, अर्थात् दोनों वर्ग की इस क्षेत्र में सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 6.016 व 5.275 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 7.139 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।

व्यक्तित्व के चतुर्थ घटक – अस्थायी के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 37.76 तथा 38.56 आया, जो कि मध्यबिन्दु 40 से कम है, अर्थात् दोनों वर्ग की इस क्षेत्र में नकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। अर्थात् दोनों ही वर्ग के विद्यार्थी व्यक्तित्व को अस्थायी मानते है। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 6.420 व 4.850 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 1.406 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से कम है। अतः अन्तर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।

व्यक्तित्व के पंचम घटक – समायोजन के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 48.24 तथा 44.44 आया, जो कि मध्यबिन्दु 40 से अधिक है, अर्थात् दोनों वर्ग की इस क्षेत्र में सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 3.818 व 4.691 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 8.884 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।

व्यक्तित्व के षष्ठम् घटक – तनाव/दबाव के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 40.04 तथा 41.04 आया, जो कि मध्यबिन्दु 40 से अधिक है, अर्थात् दोनों वर्ग की इस क्षेत्र में सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 4.787 व 6.128 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 1.818 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से कम है। अतः अन्तर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।

## निष्कर्ष

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। व्यक्तित्व के उप क्षेत्र अन्तर्मुखी/बहिर्मुखी, स्वयं के स्तर पर निर्णय, पराधीन/स्वतंत्र, समायोजन एवं समेकित के मध्य पुर्णतः सार्थक अन्तर पाया गया। अस्थायी एवं तनाव/दबाव के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

## सन्दर्भ


1. Best John W. Element of Educational Research, USA, Pretice Hall Inc. Eagleood Cliff, 1964.
2. Borg Walter. Educational Research an Introduction, New York Longmans, Green of Col. Ltd., 1983.
3. Buch MB. Fourth Survey of Research in Education, New Delhi (NCERT), 1983-88.
4. भार्गव, महेश चन्द्र। 'आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन' हर प्रसाद भार्गव, आगरा, 1984।
5. गेरिट, हेनरी, ई॰। "शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग" कल्याणजी पब्लिशर्स लुधियाना, 1996।
6. Mathur SS. Educational Phycology, Vinod Pustak Mandir Agra, 2008.
7. पाठक पी॰डी॰। "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2008।